4

क्या दशोरा (ब्राहण) नागर जाति के हैं? (एक विश्लेषण)

एक विवाद :–

नागर जाति वाले तथा प्रश्नोरा नागरों के कुछ व्यक्तियों ने इस दशोरा जाति को प्रश्नोरा नागर अथवा नागर जाति का होने से इन्कार किया है। इनका तर्क है कि इन दशोरों के पास नागर जाति का होने के कोई प्रमाण नहीं है। फिर इनका कहना है कि इनके संस्कार नागर जाति से भिन्न हैं। ये किस समय व किस कारण से अलग हुए ? नागरों से इनका भोजन व्यवहार व कन्या लेन–देन कब बन्द हुआ? ये नही बता सके।

इनके अलावा श्री सवाई लाल गिरधर लाल पंड्या भावनगर वाले अपनी पुस्तक "अहिच्छभ निर्देशिका" जो वि.सं. 2020 में प्रकाशित हुई है लिखते हैं कि ये दशोरा प्रश्नोरा नहीं है। इनका प्रश्नोरों के साथ भोजन व्यवहार व कन्या लेन–देन नहीं है। प्रश्नोरों मे इनकी गणना नहीं है। ये किस प्रकार अलग हुए इसके प्रमाण इनके पास नहीं है। दशपुर जाति के भट्ट विष्णु के पुत्र एक नाथ ने वि.सं. 1485 में मोकल द्वारा निर्मित चित्तौड़ किले पर समिधेश्वर मंदिर की प्रशस्ति लिखी उस समय दशोरा नाम की अलग जाति नहीं थी। उत्तरहिंद के प्रश्नोरा दशोरों को प्रश्नोरा नहीं गिनते।" आदि। ऐसे ही तर्क मुकुन्दराय, हरिदत्त पाठक ने दियें हैं।

दूसरी ओर श्याम सुन्दर दामोदर पंड्या जयपुर वाले अपनी पुस्तक "कौन कहां?" जो 1–1–82 को प्रकाशित हुई है लिखते हैं कि प्रश्नोरा उत्तर प्रदेश के बलेरी जिले के अहिच्छत्र नामक गाँव में बसते थे जिससे ये 'अहिच्छत्री' कहलाते थे। बाद में गुजरात में आकर प्रश्न नामक नगर में बस गये जिससे 'प्रश्नोरा' नाम पड़ा। बाद में नागरों से मिल गये। इनके कुल–देवता 'हाटकेश्वर' हैं। बाद में इनके छः भेद हो गये।"

दशोरों के नागर जाति का न होने का एक तर्क यह भी दिया जाता है कि इनके गोत्र प्रश्नोरा नागरों व नागरों से भिन्न हैं जिससे ये नागर जाति के नहीं हो सकते है।"

"इसके अनुसार प्रश्नोरा नागरों के कुछ 11 गोत्र है– कौशिक, दक्षस, धृत कौशिक, पारासर, भार्गव, भारद्वाज, माण्डव्य, वच्छस, सांख्यायन कश्यप। एवं माल्याणी इनमें केवल तीन गोत्र भार्गव, भारद्वाज व माण्डव्य ही दशोरों में मिलते हैं। बाकी के गोत्र प्रश्नोरों से नहीं मिलते जो अन्य जातियों से आये हैं।" इसके अवटंक इस प्रकार है–

1. भार्गव (महता, भट्ट, वैद्य, भार्गव)
2. भारद्वाज (भट्ट, वैद्य,)
3. मांडण्य (व्यास, वैद्य,)

"दूसरी ओर नागरों की गोत्र सूची में कुल 64 गोत्र हैं जिसका वर्णन स्कन्दपुराण नागर खण्ड में है। इन गोत्रों में भी दशोरा ब्राह्मणों के 7 गोत्र ही मिलते हैं जिनमें गर्ग, भार्गव, गौतम, माण्डव्य, कौशल्य, कौडिन्य तथा भारद्वाज है। बाकी के धनंजय, कौरव्य तथा वराही तीन गोत्र नागरों की गोत्र सूची में नहीं है। फिर ये अपने को नागर किस आधार पर कहते हैं,"

उत्तर :–

ये सभी तर्क ऊपरी–ऊपरी हैं। जातियों के विभाजन की प्रक्रिया आदि काल से चलती रही है तथा वर्तमान में भी कई जातियों के वर्ग अपनी मूल जाति से अलग होकर नई जाति बना लेते है तथा उनका नाम भी बदल जाता है, उनके रीति रिवाज व खान पान, वेश–भूषा, रहन–सहन, आचार–विचार आदि में भिन्नता आना स्वाभाविक है किन्तु इसी से वे अपनी मूल जाति से कट नहीं जाते। अपने इतिहास की अनभिज्ञता के कारण वे चाहे इसके ठोस प्रमाण न दे सकें। किन्तु परंपरा से जो मान्यता चली आ रही है उसे नकारा नहीं जा सकता। इन नागरों को भी अपनी जाति के विषय में जो भी जानकारी है वह स्कन्द पुराण के नागर खण्ड पर ही आधारित है। इसके बाद क्या–क्या परिवर्तन हुए इसका ज्ञान इनके पास भी नहीं है। जो कुछ लिखा गया है वह अनुमानों पर ही आधारित है जिससे किसी को भी निरपेक्ष सत्य नहीं माना जा सकता। जातियों के सम्बन्ध में जो भी सामग्री उपलब्ध होती है उनमें इतिहास, अनुमान, दन्त कथाएँ, परंपरा, मान्यता, दस्तावेज, रीति रिवाज, धार्मिक परंपरा आदि कई बातों पर आधारित होती है जिनको भी प्रमाण माना जाता है। अत : प्रश्नोरा नागरों तथा अन्य नागरों के उपयुर्क्त तर्कों का कोई खास महत्त्व नहीं है। दशोरों का प्रश्नोरा नागर अथवा नागर जाति के होने के निम्न आधार है जिनके कारण यह जाति अपने को नागर जाति का ही मानती रही है। यदि ये प्रश्नोरा नागर अथवा अन्य नागर इसे नागर न माने तो इससे इस जाति में कोई अन्तर आने वाला नहीं है।

इस जाति के नागर जाति का होने के निम्न प्रमाण है–

1. भगवान हाटकेश्वर केवल नागर जाति के ही इष्टदेव हैं तथा यह दशोरा जाति भी हाटकेश्वर की उपासक है इसलिए यह नागरों की ही एक उपजाति है। उदयपुर में भी हाटकेश्वर का एक मंदिर है। जिसकी ये पूजा उपासना करते हैं।
2. ये प्रश्नोरा नागर गुजरात के जूनागढ़ में निवास करते थे जहाँ भी इनका हाटकेश्वर का मंदिर है। यहीं से ये यज्ञ कराने हेतु मन्दसोर आये थे जिन्होंने यशोधर्मन के शासन काल में सन् 532ई. में यज्ञ कराया तथा यहीं बस गये। मन्दसोर में निवास सन् 1305 ई. तक इनकी पहचान प्रश्नोरा नागर जाति के ही रूप में थी।
3. सन् 1305 ई. में अलाउद्दीन की सेना के आक्रमण के बाद ये मेवाड़ मालवा तथा गुजरात की ओर चले गये जिनको बाद मे 'दशपुरीय ब्राह्मण' अथवा 'दशोरा' कहा जाने लगा।
4. मन्दसोर में रहने तक ये नागर ही कहे जाते थे। मन्दसोर में एक नागर मोहल्ला आज भी है।